ओ३म्

वैदिक-सन्ध्या अग्निहोत्र

लेखक —

श्री वैद्य धर्मदत्त जी आयुर्वेदाचार्य
विद्यामार्तण्ड

संवत् २०३७ मूल्य : ५.००

❀ ओ३म् ❀

आर्य-समाज के नियम तथा उद्देश्य

१—सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

★

प्रार्थना-मन्त्र

ओ३म् विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव ॥१॥

(ऋ. ५।८२।५, यजु. ३०।३)

सविता देव ! अमंगल जो उसको हमसे दूर करो ।
जो कुछ मंगल है उससे तुम हमको भरपूर करो ॥

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥

(ऋ. १०।१२१।१, यजु. १३।४)

यह जग जिसके अन्दर था, जिसने यह उत्पन्न किया,
जो इस का संचालक है, जिसने इसको जन्म दिया ।
द्यौलोक और पृथ्वी का जिसको स्वामी पाते हैं,
उस आनन्द-स्वरूप प्रभू को हम सीस झुकाते हैं ॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥

(ऋ. १०।१२१।२, यजु. २५।१३)

जिसने हमको जन्म दिया, और हमें बल, दान दिया,
देवादिक लोकों ने जिसके शासन को स्वीकार किया ।
जिसकी छाया अमृत है जिससे हटना है मौत,
उस आनन्द स्वरूप प्रभू को करते हैं दण्डौत ॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।४
(यजु. २३।३)

जो अपनी महिमा से इस, जीव जगत् का पालक है,
सूर्यादि इस ज़ड़ जगत का एक मात्र संचालक है ।।
जिसे दुपायों चौपायों सब का स्वामी पाते हैं,
उस आनन्द स्वरूप प्रभू को अपना सीस नवाते हैं ।।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्व स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।५
(ऋ. १०।१२१।५, यजु. ३२।३)

द्यौलोक और पृथ्वी का जिसने है निर्माण किया,
स्वर्ग लोक औ नाग लोक का जिसने निर्माण किया ।
अन्तरिक्ष के लोकों का जिसे विधाता कहते हैं,
उस आनन्द स्वरूप प्रभू को नमोनमः कहते हैं ।।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।६
(ऋ. १०।१२१।१०, यजु. १०।२०)

परजापते संसार में तुम से बड़ा कोई नहीं,
तुम बड़ों से भी बड़े हो तुमसे बड़ा स्वामी नहीं ।
जिन कामनाओं से यजन करते हैं वे पूर्ण हों,
और हमारे सब के घर धन-धान्य से परिपूर्ण हों ।।

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥
(यजु. ३२।१०)

हमको तुम्हारा है सहारा, तुम हमारे हो पिता,
तुम ही हमारे बन्धु हो तुम ही जगत् के हो पिता ।
भुवनों औ धामों के सब के तुम हो एक विधाता,
अमृत भोजी देव जहां रह, ते उसके भी हो त्राता ॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥
(ऋ. १।१८९।१, यजु. ४०।१६)

अन्तर्यामी हो तुम हमें ले चलो सन्मार्ग से,
ज्ञान प्रदान करो तुम ऐ, सा बचे रहें उन्मार्ग से ।
पाप कर्म को दूर करो यह आप का उपकार हो,
और हमारी नमोनमः यह आपको स्वीकार हो ॥

स्वस्तिवाचन-मन्त्र

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारं
रत्नधातमम् ॥ (ऋक्० १।१)

जो अग्रणी है इस जग का जो यज्ञ का आराध्य है,
जो हमारा है एक दाता हम सब का आराध्य है ।
धन धान्य औ रत्नादिकों का जो बड़ा इक धाम है,
उस अग्नि सम उज्ज्वल प्रभु को बारंबार प्रणाम है ॥

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।
सचस्वा नः स्वतये ॥२॥ (ऋक् १।१।२)
(यजु. ३।२४)

हम तुम्हारे पुत्र हैं तुम तो हमारे हो पिता,
तुम रहो हमको सुलभ जैसे पुत्र को होता पिता ।
पुत्र जैसे प्रेमवश हो सुख को पिता से चाहते,
है पिता वैसे ही तुमसे हम भी सुख को मांगते ॥

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ॥३॥
(ऋ० ५।५१।११)

अश्विनी दोनों तुम हम सबको सुख का दान करो,
ओ देवी अदिते ! तुम हम सब का कल्याण करो ।
सब के पोषक जो है भगवान् वे सुख की सृष्टि करें,
द्यावा पृथिवी दोनों हम सब पर सुख की वृष्टि करें ॥

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ॥४॥
(ऋ० ५।५१।१२)

वायुदेव से विनय हमारी सुख का संचार रहे,
सोम देव की कृपा हो ऐसी सुख का विस्तार रहे ।
बृहस्पति भी दया करें औ सब का कल्याण करें,
संवत्सर के बारह मास सुखमय जीवन दान करें ॥

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ॥५॥
(ऋ० ५।५१।१३)

देवगण सारे हम को सुख ही सुख का दान करें,
वैश्वानर जो अग्नि है वह सब का कल्याण करें।
बुद्धिमान हैं जो हममें वे सब की रक्षा करें,
रुद्ररूप ईश्वर हम सब की पापों से रक्षा करें॥

स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ॥६
(ऋ० ५।५१।१४)

मित्र वरुण की दया रहे दुख दर्द सब का दूर हो,
और हमारा जीवन पथ धनधान्य से भरपूर हो।
इन्द्र और अग्नि दोनों हमको सुख का दान करो,
ओ देवी अदिते तुम भी हम सबका कल्याण करो॥

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ॥७॥
(ऋ० ५।५१।१५)

सूर्य चन्द्र का पथ जैसे सब को होता सुखदायी,
वैसे जीवन पथ हम सब का सबको हो सुखदायी।
हम सत्संग करें उनका जो दाता औ दानी हैं,
जो अहिंसा के विश्वासी हैं औ आत्मज्ञानी हैं॥

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥
(ऋ. ७।३५।१५)

जो देवों के पूज्य और यज्ञों के याजक भी हैं,
अमृतमय है जीवन जिनका सत्य के पालक भी हैं ।
वे हमें सन्मार्ग औ सद्धर्म का उपदेश दें,
औ हमें दुःख से बचा कल्याण पथ से ले चलें ॥

येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः ।
उक्थ शुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्तां आदित्यां अनुमदा स्वस्तये ॥९॥
(ऋ. १०।६३।३)

हम में ऐसे जन हों जो अदितिपुत्र सम हों बलवान्,
धर्मात्मा हो उन जसे उन जैसे हों विद्वान् ।
पृथ्वी दे अन्नादिक उनको मधुर दूध समान,
द्यौः बरसे जल उनके ऊपर जो हों सुधा समान ॥

नृचक्षसा अभिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः ।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ॥१०॥
(ऋ. १०।६३।४)

देवगण जो पूज्य हैं औ अमृतत्व को हैं पा गये,
ज्ञानज्योति औ सुमति पा निष्पाप भी हैं हो गये ।
द्यौः लोक वासी वे हमें कल्याण पथ से ले चलें,
दुख से बचा हम को सदा सुख की तरफ ही ले चलें ॥

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम् ।
तां आविवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्यां अदिति स्वस्तये ॥११॥ (ऋ॰ १०।६३।५)

सम्राट् तुल्य जो देव हैं जो महान् से महान् हैं,
जो यज्ञ में आते औ जिन के द्युलोक में स्थान हैं ।
हव्यान्न औ स्तुतियों से उनका सदा पूजन करें,
औ वे हमें दुख से बचा कल्याण पथ से ले चलें ॥

कोवः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन ।
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ॥१२
(ऋ॰ १०।६३।६)

कौन तुम्हारी प्रेम भरी स्तुतियां आकर सुनता है,
कौन तुम्हारे यज्ञों को आके अलंकृत करता है ।
वह परमेश्वर है, हमको सब पापों से मुक्त करे,
और अमंगल दूरहटा मंगल से ही युक्त करे ॥

येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः ।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त्त सुपथा स्वस्तये ॥१३॥ (ऋ॰ १०।६३।७)

जिन देवों का मानव ने पहले पहल यजन किया,
भक्ति भाव से यज्ञ रचा जिनका उसने स्तवन किया ।
वे देवगण हमको सदा सर्वभयों से मुक्त करें,
और हमें सत्पथ दिखला सर्व सुखों से युक्त करें ॥

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ॥१४॥
(ऋ. १०।६३।८)

देव गण जो इस चल अचल सर्व जगत् के स्वामी हैं,
हम सबके रक्षक हैं मनन शील औ ज्ञानी हैं।
वे कृत अकृत सब पापों से आज हमको मुक्त करें,
औ हमारे जीवन पथ को सुख सुहाग से युक्त करें॥

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यम् जनम्। अग्नि मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावपृथिवी मरुतः स्वस्तये ॥१५॥
(ऋ. १०।६३।९)

जब जब कष्ट पड़े हम पर इन्द्रदेव का ध्यान करें,
मित्र वरुण औ अग्नि मरुत् गणों का आह्वान करें।
करुणाकर वे भगवान् आ कर हम सबके कष्ट हरें,
और हमें निष्पाप बना दुःख हमारे नष्ट करें॥

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥१६॥
(ऋ० १०।६३।१०)

देह रूपी दिव्य नाव यह सौ बरस तक बनी रहे,
अंग अंग स्वस्थ रहे औ सुख संपत से धनी रहे।
इस नौका पर चढ़ हम संसार सागर पार करें,
रोग शोक से बचे रहें सुख का ही संचार करें॥

विश्वे यजत्रा अधिवोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः ।• सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ॥१७॥ (ऋ० १०।६३।११)

ओ देवगण तुम हम सब की रक्षा करो रक्षा करो,
कष्टों औ क्लेशों से तुम हम सब की रक्षा करो ।
सच्चे दिल से निस दिन स्तुति हम तुम्हारी करते हैं,
सुख की राह हमें दिखाओ विनय तुम्हारी करते हैं ॥

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः । आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये ॥१८ (ऋ० १०।६३।१२)

देवगण तुम रोग शोक को हम से दूर हटाओ,
लोभ कृपणता औ कुमति से तम हमें बचाओ ।
जो द्वेष दिखाते हमसे उनको हमसे दूर करो,
और हमारे जीवन पथ को सुख से तुम भरपूर करो ॥

अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि । यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ॥१९॥ (ऋ०१०।६३।१३)

ओ देवगण तुम जिसको सत्पथ से ले जाते हो,
पाप मार्ग से जिसे बचा सुख की राह दिखाते हो ।
दुःखों से वह बच जाता जग में उन्नति करता है,
पुत्र पौत्र धन-धान्यादिक से वह निस दिन फलता है ॥

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हि ते धने ।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ॥२०॥
(ऋ० १०।६३।१४)

अन्न उपार्जन करने औ जीवन रण के लड़ने में,
हित कर धन अर्जन करने जगव्यवहार करने में ।
जिस पर कृपा तुम्हारी हो उस गाड़ी पर हम चढ़ें,
सुखकारी औ उपकारी जो पथ हों उस पर हम चलें ॥

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति । स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ॥२१॥
(ऋ० १०।६३।१५)

जल थलके और वनों के पथ हमको हों सुखदायी,
अन्तरिक्ष से जाने के पथ हमको हों सुखदायी ।
पुत्रोत्पत्ति का पथ भी पुत्रों को हो सुखकारी,
धन धान्यो पार्जन के भी पथ हमको हों सुखकारी ॥

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभिया वाममेति । सा नो अमा सो अरणे निपातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ॥२२॥
(ऋ० १०।६३।१६)

यह घर हमारा हो सुखद धन धान्य से भरपूर हो,
क्लेश कष्ट से हो रहित औ रोग शोक से दूर हो ।
देवताओं से सुरक्षित होके हम इस में बसें,
प्रेम से मिल कर रहें सब और द्वेष भाव से हम बचें ॥

इषेत्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाअ-यक्ष्मा मा वस्तेनईशत माघशंसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥२३॥ (यजु.१।१)

ईश कृपा हो हम पर ऐसी सत्कर्मों से लगे रहें,
गोधन का संवर्धन करके हम बलशाली बने रहें।
चौर्यादिक पापों से बच कर धर्ममार्ग का अनुसरण करें,
देव ! दयाकर आप हमारे पशु धन का संवर्धन करें ॥

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः देवा नो यथासदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥२४॥ (यजु.२५।१४)

कल्याण कारी कर्म ही हम सदा करते रहें,
धर्म पथ पर आगे आगे हम सदा बढ़ते रहें।
और देवगण रक्षा हमारी रातदिन करते रहें,
सारे दुःखों को हमारे वे सदा हरते रहें ॥

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाᳬं रातिरभि नो निवर्त्त-ताम्। देवानाᳬं सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२५॥ (यजु.२५।१५)

सुर गण की नजर हमारे ऊपर सीधी बनी रहे,
उनकी कृपा दृष्टि से हम सबका घर धनी रहे।
उनका मित्र भाव यह हम सबके ऊपर बना रहे,
उनके दया भाव से हम सबका जीवन बना रहे ॥

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥२६
(यजु० २५।१८)

चर औ अचर जग के स्वामी को हम सीस झुकाते हैं,
सन्मति देते जो सबको उनको हम बुलाते हैं।
जग के पोषक हैं जो धन धान्य प्रदान करें सबको,
जग के रक्षक हैं जो वे सत्पथ से ले चलें हमको ॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥२७
(यजु. २५।१९)

जग जिसका यश गाता है, वह इन्द्र हमें वरदान करे,
इस जग का जो पोषक है, वह सबका कल्याण करे।
जो सबके दुःख हरता है, वह हमको सुखदान करे,
जो विद्याओं का ज्ञाता, है वह ज्ञान प्रदान करे ॥

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥२८
(यजु. २५।२१)

कान हमारे बने रहें, औ अच्छी बातों को सुनें,
नेत्र हमारे सही रहें, और अच्छाई को लखें।
अंग हमारे बने रहें तेरा ही हम स्तवन करें,
जो कुछ फिर तुम हमको दो उस पर ही निर्वाह करें ॥

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये । नि होता सत्सि बर्हिषि ॥२९॥ (ऋ० ६।१६।१०, साम०१।१)

अग्नि रूप हे परमेश्वर तुमको हम बुलाते हैं,
हृदय के अपने आसन पर तुमको-हम बिठलाते हैं।
तुम्हारे आने से घर धन धान्य से भरपूर हो,
और कष्ट क्लेश हमारा सारा घर से दूर हो ॥

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः । देवेभिर्मानुषे जने ॥३०
(साम० १।२)

तुम ही सब शुभ कर्मों में होता बन कर रहते हो,
तुम ही जन जन के अन्दर मानुष-बन कर बैठे हो।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः । वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥३१॥ (अथर्व०१।१।१)

जिन इक्कीस द्रव्यों से वह विश्वका निर्माण करे,
वाचस्पति उनसे मेरे तन को भी बलवान् करे।

शान्तिप्रकरण—मन्त्र

शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या । शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयो शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥१॥
(ऋ. ७।३५।१, यजु. ६।११, अथर्व १६।१०।१)

इन्द्र अग्नि दोनों हमको रक्षा द्वारा शान्ति दें,
इन्द्र वरुण दोनों हमको द्रव्य देकर शान्ति दें।
इन्द्र सोम दोनों हमको सुख देकर के शान्ति दें,
इन्द्र पूषा दोनों हमको अन्न देकर के शान्ति दें ॥

शन्नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शन्नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः । शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्य्यमा पुरुजातो अस्तु ॥२॥ (ऋ.७।३५।२, अथर्व.१९।१०।२)

बड़प्पन बड़ाई ये दोनों हमें शान्ति देवें सदा,
बुद्धि औ ऐश्वर्य दोनों हमें शान्ति देवें सदा ।
सच्चाई का जीवन हमारा हमें शान्ति देवे सदा,
जो न्याय कारी है ईश्वर हमें शान्ति देवे सदा ॥

शं नो धाता शमुधर्त्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः । शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ॥३॥ (ऋ. ७।३५।३, अथर्व. १९।१०।३)

सबका पोषक धारक वह हम सब का कल्याण करे,
अन्नों को उपजाकर पृथ्वी सबका कल्याण करे ।
अन्तरिक्ष औ बादल जल बरसा सब का कल्याण करें,
देवताओं के आशिश हम सब का कल्याण करें ॥

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् । शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शन्न इषिरो अभि वातु वातः ॥४॥ (ऋ. ७।३५।४, अथर्व. १३।१०।४)

प्रज्वलित हुई यह अग्नि हम सब का कल्याण करे,
बहती हुई प्रबल हवा यह हम सबका कल्याण करे ।
पुण्य जनों के पुण्य कर्म हम सबका कल्याण करें,
मित्रवरुण अश्विनी दोनों सबका कल्याण करें ॥

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ॥५

(ऋ. ७।३५।५, अथर्व. १९।१०।५)

द्यौः पिता पृथ्वी माता हम सबका कल्याण करें,
वन की नाना ओषधियां हम सब का कल्याण करें ।
अन्तरिक्ष जो है दिखलाता हम सबका कल्याण करे,
दुनिया का जो स्वामी है हम सब का कल्याण करे ॥

शन्न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः । शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह शृणोतु ॥६॥

(ऋ. ७।३५।६, अथर्व. १९।१०।६)

इन्द्रदेव धन आदिक से हम सबका कल्याण करे,
वरुण देव बारह मास हम सबका कल्याण करे ।
रुद्रदेव रुद्र कर्मों मे हम सब का कल्याण करे,
त्वष्टा सुन वचन हमारे हम सबका कल्याण करे ॥

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शंनो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः । शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ॥७॥

(ऋ.७।३५।७, अथर्व.१९।१०।७)

सोम ओषध औ वेदमन्त्र हम सबका कल्याण करें,
यज्ञ यज्ञ शाला के पत्थर हम सबका कल्याण करें ।
यज्ञशाला के ये खम्भे हम सबका कल्याण करें,
यज्ञ सामग्री और वेदि हम सबका कल्याण करें ॥

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्त्रः प्रदिशो भवन्तु ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥८॥
(ऋ. ७।३५।८, अथर्व १६।१०।८)

तेजोमय यह सूर्योदय हम सबका कल्याण करे,
पूर्वादिक चार दिशायें हम सबका कल्याण करें ।
ये नदियां और उनके जल हम सबका कल्याण करें,
अचल खडे ये पर्वत भी हम सबका कल्याण करें ॥

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तुमरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥९॥
(ऋ. ७।३५।९, अथर्व.१९।१०।९)

माता अदितिसत्कर्म करा, के सब का कल्याण करे,
जो व्यापक औ पोषक है वह सबका कल्याण करे ।
मरुद्गण जो पूज्य हैं वे हम सबका कल्याण करे,
यहवायु औ भविष्य हमारा सबका कल्याण करें ॥

शन्नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ॥१०॥
(ऋ.७।३५।१०, अथर्व. १९।१०।१०)

जग का रक्षक सूर्य देव हम सबका कल्याण करे,
ये सुनहरी सी उषायें हम सबका कल्याण करें ।
बादल जो बरसते हैं हम सबका कल्याण करें,
खेती करते हैं जो जन वे सबका कल्याण करें ॥

शन्नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिशाचः शमुराति शाचः शन्नों दिव्याः पार्थिवाः शन्नो अप्याः ॥११॥

विश्व के जो देवगण हैं वे सब का कल्याण करें,
बुद्धि युक्त जो वाणी है वह सब का कल्याण करे।
महापुरुष जो हैं हम में वे सब का कल्याण करें,
द्यौः पृथ्वी अरु जल के वासी सब का कल्याण करें॥

शन्नः सत्यस्यपतयोभवन्तु शन्नोअर्वन्तः शमु सन्तु गावः।
शन्न ऋभवः सुकृतः सुहस्ता शन्नोभवन्तु पितरो हवेषु॥१२॥
(ऋ. ७।३५।१२, अथर्व १९।११।१)

सत्य के जो परम भक्त हैं सबका कल्याण करें,
घोड़े औ गायें सेवा कर सब का कल्याण करें।
शिल्पी और कारीगर भी हम सबका कल्याण करें,
वृद्ध जन सत्कर्मों के, करने का वरदान करे॥

शन्नो अज एकपाद् देवो अस्तु शन्नो अहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः।
शन्नो अपां न पात् पेरु रस्तु शंनः पृश्निर्भवतु देवगोपाः॥१३
(ऋ. ७।३५।१३, अथर्व १९।११।३)

अजर अमर परमेश्वर वह हम सब का कल्याण करें,
देव सुरक्षित अन्तरिक्ष हम सब का कल्याण करें।
सागर और उमड़ते मेघ हम सब का कल्याण करें,
नदियों में चलती नावें हम सब का कल्याण करें॥

इन्द्रो विश्वस्य राजति शन्नो अस्तु द्विपदेशंचतुष्पदे ॥१४॥
(यजु. ३६।८)

इन्द्र विश्व का राजा है वह सब का कल्याण करे।
दो पायों औ चौपायों सब का ही कल्याण करे॥

शन्नो वातः पवतां शन्नस्तपतु सूर्यः शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु ॥१५॥
(यजु.३६।१०)

वायु बह कर सूरज तप कर हम सबका कल्याण करे।
गरजते मेघ बरस कर हम सब का कल्याण करे॥

अहानि शंभवन्तु नः शꣳ रात्रीः प्रतिधीयताम् शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शन्न इन्द्रा-पूषणावाज सातौ शमिन्द्रा सोमा सुविताय शंयोः ॥१६॥
(यजु. ३६।११)

दिन पर दिन जो आते हैं हम सब का कल्याण करें,
रात्री पर रात्रो जो आतीं सब का कल्याण करें।
इन्द्र औ अग्नि रक्षा कर के सब का कल्याण करें,
वरुण औ इन्द्र भोजन दे कर सब का कल्याण करें॥
इन्द्र और पूषा पोषण कर सब का कल्याण करें,
इन्द्र और सोम शान्ति दे कर सब का कल्याण करें॥

शन्नो देवी·रभोष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥१७॥

(ऋ. १०।६।४, यजु. ३६।१२, (अथर्व०१।६।१)

नभ से जो जल गिरता है हम सब का कल्याण करे,
अन्न प्रदान कर के वह हम लोगों की तृप्ति करे।
मंगलमय हरि हम सब की अभिलाषायें पूर्ण करे,
औ हमारे ऊपर निस दिन मंगल की ही वृष्टि करे॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१८॥

द्युलोक मुझे सुख शान्ति दे अन्तरिक्ष भी सुखशान्ति दे,
पृथ्वी मुझे सुखशान्ति दे जल भी मुझे सुखशान्ति दे।
औषधियां सुख शान्ति दें वनस्पतियां भी शान्ति दें,
ये देवगण सब शान्ति दें औ सब दिशायें शान्ति दें॥
ईश्वर मुझे सुख शान्ति दे सब ओर शान्ती ही रहे,
उस शान्ति को हम बुलाते जिस शान्ति पर सब जी रहे॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत् पश्येम शरदः शतम्। जीवेम शरदः शतम्। शृणुयाम शरदः शतम्। प्रब्रवाम शरदः शतम्। अदीनाः स्याम शरदः शतम्। भूयश्च शरदः शतात् ॥१९॥ (ऋ. ७।६६।१६ यजु. ३६।२४)

पूर्व दिशा से उदित हुआ जो जग को चमकाता है,
उज्ज्वल कर सर्व दिशायें जो हम को दिखलाता है।
सौ बरस तक उस को देखें सौ बरस तक जी पावें,

सौ बरस तक हम सुनें और सौ बरस तक चल पावें ॥
सौ बरस तक नहीं किसी के दीन कभी हम हो पावें,
सौ बरस के पीछे भी सुख से ही हम रह पावें ॥

यज्जाग्रतो दूर मुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति दूरंगमं
ज्योतिषां ज्योतिरेकंतन्मेमनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२०॥

(यजु. ३४।१)

जो जागते सोते हुए भी दूर दूर तक जाता है,
जो सब ज्योतियों में एक परम ज्योति कहलाता है।
जो दिव्य शक्ति वाला होने से मुझ में शक्ति भरे,
अमृत सम वह मन मेरा शुभ ही शुभ संकल्प करे ॥

येन कर्माण्यपसोमनीषिणो यज्ञेकृण्वन्ति विदथेषुधीराः ।
यदपूर्वं यक्ष मन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२१॥

(यजु. ३४।२)

मेधावी औ कर्मठ लोग सत्कर्म जिससे करते हैं,
धीरजधारी वीर जिससे युद्धों में भी लड़ते हैं।
एक अपूर्व यक्ष जो जन जन के अन्दर वास करे,
अमृत सम वह मन मेरा शुभ ही शुभ संकल्प करे ॥

यत्प्रज्ञानमुत चेतोधृतिश्चयज्ज्योतिरन्तरमृतंप्रजासु ।
यस्मान्न ऋते किं चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्प-
मस्तु ॥२२॥ (यजु० ३४।३)

जो ज्ञान है जो धैर्य है भीतर में जो स्मृति शक्ति है,
सब के अन्दर जलती हुई जो एक अमर ज्योति है।
जिस के विना कोई कभी काम अपना ना कर सके,
अमृतमय वह मन मेरा शुभ ही शुभ संकल्प करे॥

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीत ममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२३॥
(यजु० ३४।४)

जो हमारे तन के अन्दर अमरतत्व कहलाता है,
भूत भविष्य वर्तमान सर्व कालों में रहता है।
इस सप्तहोता देह का जो रात दिन चालन करे,
अमृतमय वह मन मेरा शुभ ही शुभ संकल्प करे॥

यस्मिन्नृचः सामयजूँषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु: ॥२४॥
(यजु. ३४।५)

रथ के आरा जैसे रथ नाभी में स्थित रहते हैं,
ऋक् यजुष् और साम वैसे जिसके अन्दर रहते हैं।
जो जन जन के अन्दर रह कर चिन्तन का काम करे,
अमृतमय वह मन मेरा शुभ ही शुभ संकल्प करे॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२५॥
(यजु० ३४।६)

सारथि जैसे घोड़ों को सत्पथ से है ले जाता,
वैसे ही जो जन-जन को ध्यान से ही है चलाता।
जो अजर है तीव्रगामी और हृदय में वास करे,
अमृतमय वह मन मेरा शुभ ही शुभ संकल्प करे।।

सनः पदस्व शं गवे शं जनायशमर्वते शꣳराजन्नोषधीभ्यः।।२६

(साम० १)

हे राजन् हम सब जनों को शान्ति का ही दान करो,
और हमारे पशुओं को भी शान्ति का ही दान करो।
तुम हमारे स्वजनों को भी शान्ति का ही दान करो,
और हमारी औषधियों को भी शान्ति का दान करो।।

अभयं नः करत्यन्तरिक्षम् अभयंद्यावापृथ्वी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तात् उत्तरादधरादभयं नो अस्तु।।२७।।

(अ० १६।१५।५)

अन्तरिक्ष यह हम सब को निर्भयता का दान करे,
ऊपर द्यौ नीचे पृथ्वी निर्भयता का दान करे।
आगे पीछे हम सब के निर्भयता का राज रहे,
ऊपर नीचे हम सब के निर्भयता का राज रहे।।

अभयं मित्रादभयममित्रा दभयं ज्ञाता दभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवानः सर्वाआशाममम मित्रं भवन्तु।।२८।।

(अथर्व० १६।१५।६)

दोस्त और दुश्मन दोनों से अभय का दान दो,
अपने औ पराये से तुम निर्भयता का दान दो।
दिन हो या रात हो हमको निर्भयता का दान दो,
सर्व दिशाओं में हमें तुम निर्भयता का दान दो॥

सन्ध्या के मन्त्र

आचमन-मन्त्र

ओम् शन्नोदेवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥१॥ (यजु० ३६।१२)

नभ से जो जल गिरता है हम सब का कल्याण करे,
अन्न प्रदान करके वह हम लोगों की तृप्ति करे।
मंगलमय हरि हम सब की अभिलाषायें पूर्ण करे,
औ हमारे ऊपर निसदिन मंगल की ही वृष्टि करे॥

अङ्गस्पर्श-मन्त्र

ओम् वाक् वाक्। ओम् प्राणः प्राणः। ओम् चक्षुः चक्षुः।
ओम् श्रोत्रम श्रोत्रम्। ओम् नाभिः। ओम् हृदयम्।
ओम् कण्ठः। ओम् शिरः। ओम् बाहुभ्यां यशोबलम्।
ओम् करतलकरपृष्ठे ॥२॥

देव ! हमारी वाणी हो अजय तेज से भरी हुई,
प्राणशक्ति भी हो सब के रोम रोम में रमी हुई।
नेत्रों में नाथ ! हमारे दृक् शक्ति यह बनी रहे,
श्रवणेन्द्रिय श्रवण शक्ति से, सदा हमारी धनी रहे ॥
नाभिस्थल पर रहने वाले अंगों को हम प्रबल करें,
और हृदय की निर्बलता हम सब अपनी दूर करें।
कण्ठ हमारा सुस्वर हो ऐसा ही हम यत्न करें,
बुद्धि यथा बढ़े हमारी ऐसे ही हम कार्य करें ॥
अपनी बाहों में हम यश औ बल का संचार करें,
करतल औ कर पृष्ठ से हम पाप का संहार करें ॥

मार्जन-मन्त्र

ओम् भूः पुनातु शिरसि। ओम् भुवः पुनातु नेत्रयोः।
ओम् स्वः पुनातु कण्ठे। ओम् महः पुनातु हृदये।
ओम् जनः पुनातुनाभ्याम्। ओम् तपः पुनातु पादयोः।
ओम् सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। ओम् खं ब्रह्म पुनातु
सर्वत्र ॥३॥

अविनाशी जगदीश्वर हम सब की बुद्धि शुद्ध करे,
औ हमारी दृक् शक्ति को ज्ञानरूप वह तीव्र करे।
प्रभु आनन्दमय हमारी वाणी के सब दोष हरे,
वही महाप्रभु हम सब के हृदयों में शुभभाव भरे ॥
सकलजगत का उत्पादक जननेन्द्रिय को शुद्ध करे,

महा तपस्वी पावों में सहन शक्ति उद्बुद्ध करे।
सत्यरूप वह हमारी बुद्धि को सुपवित्र करे,
औ वही खंब्रह्म हमारे सब अङ्गों को शुद्ध करे॥

प्राणायाम-मन्त्र

ओम् भूः। ओम् भुवः। ओम् स्वः। ओम् महः।
ओम् जनः। ओम् तपः ओम् सत्यम् ॥४॥
(तैत्ति० आर० ६, प्रपा० १०, अनु० २७)

स्वामी तू है अविनाशी और सभी कुछ नश्वर है,
और सभी हैं अज्ञानी तू ज्ञानमय परमेश्वर है।
तुझ बिन दुःखमय है सब तू परमानन्द कहाता है,
महान् पिता यह जग तेरे आगे क्षुद्र लखाता है॥
चर औ अचर जगत का तू धाता और विधाता है,
अपनी अतुल तपस्या से महातपी कहलाता है।
सत्यरूप तू हो जग में तेरी ही सब माया है,
नाना नामों से ऋषियों ने तेरा यश गाया है॥

अघमर्षण-मन्त्र

ओम् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः ॥५॥
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतोवशी ॥६॥

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् दिवञ्च
पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥७॥

(ऋ. १०।१९०।१-२-३)

ऋत या सत्य उसी ईश्वर के तप से उत्पन्न हुआ,
प्रलय रूप अव्यक्त निशा का फिर आविर्भाव हुआ।
प्रकृति रूप सागर उस के पीछे फिर विक्षुब्ध हुआ,
और काल की सत्ता का ज्ञान तभी से प्रकट हुआ॥
क्षुब्ध प्रकृति को वश कर के उसने यह संसार रचा,
द्यौ पृथिवी आकाश स्वर्ग रवि चन्द्र औ दिन रात रचा।
पूर्व युगों में जैसे था वैसे ही फिर जन्म दिया,
पापों से हम छूट सकें इसी लिये उत्पन्न किया॥

मनसा परिक्रमा-मन्त्र

ओम् प्राची दिगग्निरधिपति रसितो रक्षितादित्या इषवः।
तेभ्योनमोऽधिपतिभ्योनमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥८॥

पूर्व दिशा के अग्निरूप तुम स्वामी कहलाते हो,
सूर्य रूपी निज बाणों से अन्धकार बिनसाते हो।
तुम से स्वामी और रक्षक को हम सब सीस नवाते हैं,
औ तुम्हारे बाणों को आदर भाव दिखाते हैं॥
जो हम से औ जिन से हम द्वेष भाव दिखाते हैं,
देव तुम्हारे न्यायालय उन का न्याय कराते हैं॥

ओम् दक्षिणादिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्योनमोऽधिपतिभ्यो नम रक्षितृभ्यो नम इषुभ्योनम एभ्योऽस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥९॥

दक्षिण में इन्द्ररूप से स्वामी बन कर रहते हो,
बुधजन रूपी निज बाणों से कुटिलों को हरने हो।
तुम से स्वामी औ रक्षक को हम सीस नवाते हैं,
औ तुम्हारे बाणों को आदर भाव दिखाते हैं॥
जो हम से औ जिन से हम द्वेष भाव दिखलाते हैं,
देव तुम्हारे न्यायालय उन का न्याय कराते हैं॥

ओम् प्रतीचीदिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षिताऽन्नमिषवः। तेभ्योनमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्योऽस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१०॥

पश्चिम के वरुण रूप से तुम स्वामी कहलाते हो,
सम्पद्रूप निज बाणों से सब दारिद्य मिटाते हो।
तुम से स्वामी औ रक्षक को हम सीस नवाते हैं,
औ तुम्हारे बाणों को आदर भाव दिखाते हैं॥
जो हम से और जिन से हम द्वेषभाव दिखलाते हैं,
देव तुम्हारे न्यायालय उन का न्याय कराते हैं॥

ओम् उदीची दिक् सोमोऽधिपतिःस्वजोरक्षिताऽशनि-
रिषवः । तेभ्योनमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं
द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥११॥

उत्तर दिशा के सोम रूप तुम स्वामी कहलाते हो,
विद्युत् रूप निज बाणों से नाना रोग मिटाते हो।
तुम से स्वामी औ रक्षक को हम सीस नवाते है,
औ तुम्हारे बाणों को आदर भाव दिखाते हैं॥
जो हम से और जिन से हम द्वेषभाव दिखलाते हैं,
देव तुम्हारे न्यायालय उन का न्याय कराते हैं॥

ओम् ध्रुवादिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध
इषवः । तेभ्योनमोऽधिपतिभ्योनमो रक्षितृभ्यो नम
इषुभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि
यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१२॥

(यजु. २५।१६)

निम्न दिशा के विष्णु रूप तुम स्वामी कहलाते हो,
औषध रूप निज बाणों से नाना दुःख मिटाते हो।
तुम से स्वामी औ रक्षक को हम सीस झुकाते हैं,
औ तुम्हारे बाणों को आदर भाव दिखाते हैं॥
जो हम से औ जिन से हम द्वेषभाव दिखलाते हैं,
देव तुम्हारे न्यायालय उन का न्याय कराते हैं॥

ओम् ऊर्ध्वादिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रोरक्षिता वर्षमिषवः।
तेभ्योनमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्योनम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१३॥

(अथर्व. ३।२७ १-२-३-४-५-६)

सब के स्वामी बन कर तुम ऊर्ध्व दिशा में रहते हो,
वर्षा रूपी बाणों से क्लेश सभी के हरते हो।
तुम से स्वामी और रक्षक को हम सीस झुकाते हैं,
औ तुम्हारे बाणों को आदर भाव दिखलाते हैं॥
जो हम से और जिन से हम द्वेष भाव दिखलाते हैं,
देव तम्हारे न्यायालय उन का न्याय कराते हैं॥

उपस्थान-मन्त्र

ओम् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ १४॥

(यजु० ३५।१४)

अन्धकार से परे तुम परमधाम कहलाते हो,
सूर्यों के भी सूर्य तुम ज्योतिर्मय दिखलाते हो।
महादेव ! सब देवो के त्राता तुम को पाते हैं,
देव ! तुम्हारे चरणो में प्रेम भाव से आते हैं॥

ओम् उदुत्यं जातवेदसं देव वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥१५॥ (यजु० ३३।३१)

ज्ञानमयी गंगा के तुम आदि स्रोत कहाते हो,
ज्ञान सूर्य हो चहुं दिश अपनी किरणों को फैलाते हो।
देव तुम्हारी ये किरणें हम को राह दिखाती हैं,
औ तुम्हारे चरणों की ओर हमें ले जाती हैं॥

ओम् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षम् सूर्य आत्मा जगत स्तस्थुषश्च स्वाहा ॥१६॥ (यजु. ७।४२)

देवों में तुम सुन्दरतम महाबली कहलाते हो,
मित्र वरुण औ अग्नि के संचालक कहलाते हो।
द्यौ पृथिवी औ अन्तरिक्ष में तुम ही हो इक व्याप रहे,
जड़ चेतन सब जब जग में तुम प्राणरूप हो बैठ रहे॥
मधुर प्रेम वाणी से तुम को नाथ! बुलाते हैं,
औ तुम्हें निज हृदयों के आसन पर बिठलाते हैं॥

ओम् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत्। पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतम्। शृणुयाम शरदः शतम्। प्रब्रवाम शरदः शतम् अदीनाः स्याम शरदः शतम्। भूयश्च शरदः शतात् ॥१७॥ (यजु. ३६।२४)

चक्षु रूप तुम हो जग के सब को राह दिखाते हो,
देव जनों के हृदयों में विमल रूप में आते हो।
सौ बरस तक तुम को देखें, सौ बरस तक जी पावें,
सौ बरस तक सुन पाव, नाम तुम्हारा ही गावें॥

सौ बरस तक नहीं किसी के दीन कभी हम हो पावें,
सौ बरस के पीछे भी हम ध्यान तुम्हारा कर पावें ॥

गायत्री-मन्त्र

ओम् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥१८॥

(यजु. ३६।३)

तेजोमय रूप तुम्हारा वेदों ने बतलाया है,
औ आप का यह रूप हम सब के ही मन भाया है।
इस तुम्हारे दिव्य रुप का निस दिन हम ध्यान करें,
कर के ध्यान तुम्हारा निजबुद्धि को हम शुद्ध करें ॥

नमस्कार-मन्त्र

ओम् नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च,
मयस्कराय च, नमः शिवाय च, शिवतराय च ॥१९॥

(यजु० १६।४१)

मंगलमय तुम हो तुमको हम सब सीस नवाते हैं,
परमानन्द रूप तुम को आदर भाव दिखाते हैं।
मंगल कर सुख कर हो हम शरण तुम्हारी आते हैं,
मंगल कर अति मंगल कर तुम को सीस नवाते हैं।।

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

हवन-मन्त्र

आचमन - मन्त्र

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।
ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ।
ओम् सत्यं यशः श्रीर्मयिश्रीः श्रयतां स्वाहा ॥१॥

(आश्वलायनगृह्यसूत्र १।२४, मानवगृह्य सू० १।६)

अमृत जिस पर पड़ा हुआ है उस जल का मैं पान करूं,
अमृत जिसमें ढका हुआ है उस जल का मैं पान करूं ।
इस के पीने से मुझ में सच्चाई का वास रहे,
लक्ष्मी का अरु यश का अरु शोभा का भी वास रहे ॥

अङ्गस्पर्श-मन्त्र

ओम् वाङ्मे आस्येऽस्तु । ओम् नसोर्मे प्राणोऽस्तु ।
ओम् चक्षुर्मे चक्षुरस्तु । ओम् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।
ओम् बाह्वोर्मे बलमस्तु । ओम् ऊर्वो र्मे ओजोऽस्तु ।
ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनू स्तन्वा मे सह सन्तु ॥२॥

(पारस्कर गृह्य सूत्र १।३।५)

मुख में वाणी बनी रहे नासा मे नित प्राण रहे,
नयनों में दृक् शक्ति अरु कानों में श्रुति बनी रहे ।
बाहों में बल बना रहे जांघों में भी ओज़ रहे,
अंग अंग बलवान रहे देह सदा नीरोग रहे ॥

अग्नि आधान-मन्त्र

ओम् भूर्भुवः स्वः । (गोभिल गृह्य सूत्र १।१।११)

ओम् भूर्भुवः स्व द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा तस्यास्ते पृथिवि ! देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नाद मन्नाद्यायादधे ॥३॥

(यजु. ३।५)

सत् चित् आनन्द प्रभू का चित्त में अपने ध्यान करूं,
द्यौः सम पावन पृथ्वी पर अग्नी का आधान करूं ।
देव यज्ञ करते हैं जहां उसमें घृत का दान करूं,
इस यज्ञ कर्म के द्वारा, अन्नादिक आदान करूं ॥

ओम् उद्बुध्यस्व अग्ने प्रतिजागृहि, त्वमिष्टापूर्ते संसृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥४॥ (यजु० १५।५४)

बढ़ो बढ़ो ओ अग्ने तुम अपने को प्रज्वलित करो,
इष्ट द्रव्य देकर तुम हम सब को भी सम्मुदित करो ।
यज्ञ भूमी पर देवियां औ देव जन आसीन हों,
यजमान भी आसीन हो, कर यज्ञ में लवलीन हो ॥

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे, इदन्नमम ॥५॥

(आश्वलायन गृह्य सूत्र १।१०।१२)

यह ईंधन जीवन तेरा इससे मुझको दीप्त करें,
घृत आदिक गंध द्रव्य से भी तुझ को संतृप्त करें ।
पुत्र पौत्र धन धान्यादिक से हम को सम्मृद्ध करो,
ब्राह्मतेज अरु पशुधन से भी हमको संवृद्ध करो ।।

एक समिधा डालें

ओम् समिधाग्निं दुवस्त घृतैर्बोधयतातिथिम् ।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा ।।६।।

(यजु० ३।१)

अतिथि रूप इस अग्नी को घृत आदिक से तृप्त करें ।
हव्य द्रव्य की आहुति दे इसको हम उद्बुद्ध करें ।।

ओम् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन ।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा ।७।। (यजु० ३।२)

प्रज्वलित हुई तुझमें हम घृत समिधा का दान करें ।
जातवेदस हो तुम अग्ने ! तेरा हम सन्मान करें ।।

दूसरी समिधा डालें

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे, इदन्नमम ।।८।।

पांच बार पढ़ें, घृत आहुति दें ।

यह ईंधन जीवन तेरा इससे तुझ को दीप्त करें,
घृत आदिक शुभ गन्ध द्रव्य से तुझ को संतृप्त करें ।

पुत्र पौत्र धन धान्यादिक से हम को सम्मृद्ध करो,
ब्राह्म तेज अरु पशुधन से भी हम को संवृद्ध करो ॥

जल प्रसेचन-मन्त्र

ओम् अदिते अनुमन्यस्व । ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व । ओम् सरस्वति अनुमन्यस्व ॥९॥ (गोभिल सूत्र १।१-२-३)

ये पढ़ते हुये पहले पूर्व फिर पश्चिम फिर उत्तर में जल छिड़कें ।

ओ अदिते ! ओ अनुमति ! दोनों हम पर अनुकूल रहो ।
ओ विद्या की देवी तुम भी हम पर अनुकूल रहो ॥

ओम् देव सवितः प्रसुवयज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः, केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥१०॥ (यजु. ३०।१)

इसे पढ़ दक्षिण में और चारों ओर जल छिड़कें ।

जगत्पिता तुम यज्ञ औ यजमान का वर्धन करो,
गन्धर्व हो तुम केतपू इस गेह को पावन करो ।
इस यज्ञ में यजमान को भगवन् सदा ऐश्वर्य दो,
वाचस्पते वाणी में हम सब के ही माधुर्य दो ॥

आज्याहुति-मन्त्र

ओम् अग्नये स्वाहा । इदमग्नये इदं न मम ॥११॥

(कुण्ड के उत्तर भाग में आहुति दें) (यजु० २२।२७)

ओम् सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय इदन्न मम ॥

(कुण्ड के दक्षिण भाग में आहुति दें) (यजु० २२।२७)

ओम् प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इ ं न मम ॥

(यजु० २२।२०

ओम् इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय इदन्न मम ॥

(इन दो मन्त्रों से कुण्ड के मध्य में आहुति दें) (यजु० २२।२७

अग्नि देव की सेवा में दें घृत की एक आहुति,
सोम देव की सेवा में दें घृत की एक आहुति ।
सर्व प्रजाओं के स्वामी को दें घृत की इक आहुति,
ऐश्वर्य के स्वामी हैं जो उन इन्द्र को दें आहुति ॥

प्रातःकालिक हवन-मन्त्र

ओम् सूर्यो ज्योति र्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥१२॥

(यजु० ३।६)

ज्योतिर्मय जो सूर्य है उस को आहुति देते हैं ॥

ओम् सूर्यो वर्चो, ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥

(यजु० ३।६)

सूरज की उस ज्योति को जो करती जीवन दान ।
उसको भी करते हैं अब हम इक आहुति का दान ॥

ओम् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।

(यजु० ३।६)

सूरज और उस की ज्योति दोनों को दें हम आहुति ॥

ओम् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥ (यजु० ३।१०)

भगवत् के संग उषा को उदित हुआ जब पाते हैं ।
उस वेला में सूर्य देव को इक आहुति देते हैं ॥

सायंकालिक हवन-मन्त्र

ओम् अग्नि ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥१३॥

(यजु० ३।९)

ज्योतिर्मय जो अग्नि है, उसको आहुति देते हैं ॥

ओम् अग्निर्वर्चो, ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥

(यजु० ३।९)

अग्नि की उस ज्योति को जो देती जीवन दान ।
उसको भी करते हैं हम इक आहुति का दान ॥

अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥

(यजु० ३।९)

ज्योतिर्मय जो अग्नि है उसको आहुति देते हैं ॥

ओम् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणोऽग्नि-र्वेतु स्वाहा ॥ (यजु० ३।१०)

भगवत के संग निशा को उदित हुआ जब पाते हैं।
उस बेला में अग्नि देव को हम आहुति देते हैं ॥

दोनों काल के हवन-मन्त्र

ओम् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम। ओम् भुर्वायवे अपानाय स्वाहा। इदं वायवे अपानाय इदन्न मम। ओम् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय स्वाहा इदन्न मम। ओम् भूर्भुवः स्व स्वरग्निवाय्ववादित्येभ्यः प्राणापान व्यानेभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापान व्यानेभ्यः इदन्न मम॥१४

पारस्कर १।६।३)

भूः भुवः स्वः कहके हम अब दे रहे यह आहुति,
प्राणरूप जो अग्नि है उसे दे रहे इक आहुति।
अपान रूप जो वायु है उसे दे रहे इक आहुति,
व्यान रूप जो सूर्य है उसे दे रहे इक आहुति॥
प्राण अपान व्यानादिक सबको दें इक आहुति,
अग्नि वायु औ सूर्य समझकर इनको दें यह आहुति॥

ओम् प्रजापते स्वाहा॥

(मौन रह कर एक आहुति दें)

सर्व प्रजाओं के स्वामी को देते हैं इक आहुति॥

ओम् आपो ज्योतीरसोऽमृतंब्रह्मभूर्भुवः स्वरों स्वाहा॥

जलसम शामक है जो औ सूर्य ज्योति सम उज्ज्वल,
रस सम है जो अति मधुर, अरु है अमृत सम शीतल ।
बड़ों से भी बड़ा, जो जिस की शरण सब लेते हैं,
सत चित आनन्द रूप उसको इक आहुति देते हैं ॥

ओम् यांमेधां देवगणाः पितरश्चोपासते । तयामामद्य
मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु ॥१५॥

(यजु० ३२।१४)

जिस सद्बुद्धि के पाने को देवादिक तरसाते हैं,
जिस को पाकर महापुरुष जग में आदर पाते हैं ।
अग्निरूप ! उस सद्बुद्धि का हम को भी दान करो,
सद्गुण बढ़ें हमारे अन्दर ऐसा तुम वरदान करो ।

ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं
तन्न आसुव ॥१६॥ (ऋ० ५।८२।५) । . ३०।३

सविता देव ! अमंगल जो उस को हम से दूर करो ।
जो कुछ मंगल है उस से तुम हम को भरपूर करो ॥

ओम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा ॥१७॥

(ऋ. ३।३२।१०)

तेजोमय रूप तुम्हारा वेदों ने बतलाया है,
औ आप का यह रूप हम सब के ही मन भाया है ।

इस तुम्हारे दिव्य रूप का निसदिन हम ध्यान करें,
कर के ध्यान तुम्हारा निजबुद्धि को हम शुद्ध करें ।।

ओम् शन्नो मित्रः, शंवरुणः, शन्नोभवतु अर्यमा, शन्न
इन्द्रो बृहस्पतिः, शन्नो विष्णुरुरुक्रमः, नमो ब्रह्मणे
नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि, त्वामेव प्रत्यक्षं
ब्रह्म वदिष्यामि, ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि।
तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु मानमवतु वक्तारम् ।।

हे मित्र ! वरुण ! अर्यमा ! तुम मेरा कल्याण करो,
हे इन्द्र ! गुरु ! और विष्णु ! तुम मेरा कल्याण करो ।

प्रत्यक्ष ब्रह्म हो तुम, तुम को बारबार प्रणाम हो
मैं तुम्हें प्रत्यक्ष देख दिल में तेरा धाम हो ।।
मैं सत्य बोलूंगा सदा, मैं सत्य का पालन करूं,
रक्षा करो, रक्षा करो तुम मेरी भगवान्,
रक्षा करो मैं सुखी रहूँ तुम ऐसा दो वरदा ।।

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेनावशिष्यते ।।१८।।

उस पूर्ण ब्रह्म में से यह पूर्ण जगत् बन जाता है ।
उस पूर्ण में से पूर्ण ले कर पूर्ण ही बच जाता है ।

ओम् सर्वं वै पूर्ण ँ स्वाहा ।।१९।।
पूर्ण हुआ यह यज्ञ है पूर्णाहुति अब देता हूं ।।

(तीन बार बोल और आहुति दें)

ओम् तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि ओम् आयुर्दा अग्ने-
ऽसि आयुर्मे देहि। ओम् वर्चोदा अग्नेऽसिवर्चो मे
देहि। ओम् अग्ने! यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण ॥२०

देह के रक्षक हो अग्ने! मेरी रक्षा कीजिये,
आयु के वर्धक हो अग्ने! मुझ को आयुष दीजिये।
तेज के दाता हो अग्ने तेज मुझ को दीजिये,
जो न्यूनता हो देह में उस की पूर्ति कीजिये ॥

ओम् मेधाम्मे सविता आदधातु। ओम् मेधाम्मे सरस्वत्या-
दधातु। ओम् मेधाम्मे अश्विनौ देवावाधत्तां
पुष्कर स्रजौ ॥२१॥

जगत्पिता वह मुझको सद्बुद्धि का दान करे,
सरस्वती देवी मुझ को सद्बुद्धि का दान करे।
अश्विनी कुमार दोनों सद्बुद्धि का दान करें,
देव गण सब मुझ को सद्बुद्धि का दान करें ॥

ओम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः
शान्ति रोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः
शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः सा मा शान्ति-
रेधि। ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥२२॥

(यजु. ३६)

द्युलोक मुझे सुख शान्ति दे अन्तरिक्ष भी सुखशान्ति दे,
पृथ्वी मुझे सुखशान्ति दे, जल भी मुझे सुखशान्ति दे ।

औषधियां सुखशान्ति दें, वनस्पतियां भी शान्ति दें,
ये देवगण सब शान्ति दें औ सब दिशायें शान्ति दें ॥
ईश्वर मुझे सुखशान्ति दे सब ओर शान्ती ही रहे
उस शान्ति को हैं बुलाते जिस शान्ति पर सब जी रहे ॥

यज्ञ-प्रार्थना

यज्ञरूप प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये ।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिये ॥
वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक सागर से तरें ॥
अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर उपकार को ।
धर्म मर्यादा चला कर लाभ दें संसार को ॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि सब करते रहें ।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें ॥
भावना मिट जाय मन से पाप अत्याचार की ।
कामनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नार की ॥
लाभकारी हो हवन सब जीवधारी के लिये ।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गंध को धारण किये ॥
स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो ।
इदं न मम का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥
हाथ जोड़ झुकाये मस्तक वन्दना हम कर रहे ।
नाथ करुणा रूप करुणा आप की सब पर रहे ॥

ओ३म्

ब्रह्म मुहूर्त में जागरण के समय मनन करने योग्य मन्त्र

(ऋ. मण्डल ७, सूक्त ४१, मन्त्र १–५)

१–ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे
प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं
प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम ॥

अर्थ–(प्रातः) प्रभात वेला में (अग्निम्) स्व प्रकाश स्वरूप, ज्ञान स्वरूप तथा (प्रातः) प्रातःकाल में (इन्द्रम्) परमैश्वर्य युक्त, परमैश्वर्य के दाता तथा (प्रातः) प्रातःकाल में (मित्रा वरुणा) प्राण और प्रदान के समान प्रिय और सर्वशक्तिमान् तथा (प्रातः) प्रातःकाल में (अश्विना) सूर्य और चन्द्र को उत्पन्न करने वाले उस परमात्मा को (हवामहे) हम आह्वान करते हैं अर्थात् श्रद्धा भक्ति से उसकी स्तुति करते हैं। (प्रात) प्रभात वेला में (भगम्) भजनीय तथा ऐश्वर्य युक्त (पूषणम् पुष्टिकर्त्ता (ब्रह्मणस्पतिम्) वेद, ब्रह्माण्ड व सकल ऐश्वर्य के स्वामी को तथा (प्रातः) प्रभात वेला में (सोमम्) अन्तर्यामी प्रेरक (उत्) और (रुद्रम्) दुष्टों-पापियों को रुलाने वाले जगदीश्वर की (हुवेम) स्तुति करते हैं।

२–ओं प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम
वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्
राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥

अर्थ-(प्रातः) प्रभात वेला में (जितम्) जयशील (भगम्) ऐश्वर्य के दाता (उग्रम्) तेजस्वी (अदि तेः पुत्रम्) अन्तरिक्ष के पुत्र अर्थात् सूर्य की उत्पत्ति करने वाले और (यः) जो (विधर्ता) विशेष करके सूर्यादि लोकों का धारण करने वाला है उसको (वयं) हम (हवामहे) हृदय में आह्वान करते हैं जो(आध्रः)सब ओर से धारण कर्त्ता (यं चित्) जिस किसी का भी (मन्यमानः) जानने हारा (तुरश्चित्) दुष्टों को दण्ड देने वाला (राजा) सबका प्रकाशक है और (यम्) जिस (भगम्) भजनीय स्वरूप को (चित्) भी (भक्षि) मैं सेवन करता हूं उस परमात्मा ने (इति) इस प्रकार (आह) हम को उपदेश दिया है कि तुम मेरी ही उपासना किया करो और मेरी ही आज्ञा पर चला करो।

३-ओं भग प्रणेतर्भग सत्यराधो
भगेमां धिय मुदवा ददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैः
भग प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम ॥

अर्थ-(भग परमैश्वर्यवान् सकल ऐश्वर्य के दाता भगवान् आप (प्रणेतः)पुरुषार्थ के प्रेरक हो। (भग) हे भगवान्! आप (सत्य-राध) सत्य ऐश्वर्य तथा मोक्ष को सिद्धि करने वाले हो। (भग) हे भजनीय परमेश्वर! (इमाम्) इस (धियम्) बुद्धि को(ददत्) देते हुए (उत्+अव) उत्कृष्टता से प्राप्त कराओ। (भग)हे सर्वैश्वर्योत्पादक! (नः) हमारे लिए (गोभिः) सर्वोत्तम गौओं (अश्वैः) सर्वोत्तम घोड़ों आदि तथा (नृभि) सर्वोत्तम मनुष्यों के साथ (प्रजनय) उत्तम ऐश्वर्य को अच्छी प्रकार उत्पन्न कीजिए (भग) हे भगवन्! हम आपकी कृपा

म (प्रनूवन्तः) उत्तम-उत्तम स्त्री सन्तान भृत्यादि वाले (स्याम) हों।

४—ओं उतेदानीं भगवन्तः स्याम
उत प्रपित्व उत मध्ये अन्हाम् ।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य
वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥

अर्थ-(मघवन्) हे परम पूज्य सकल ऐश्वर्य के दाता जगदीश्वर (वयम्) हम लोग आपकी कृपा से और अपने पुरुषार्थ से (इदानीम्) इस समय (उत्) और (प्रपित्वे) उत्तमता से ऐश्वर्य की प्राप्ति के समय में (उत्) और (अह्नाम्) दिनों के (मध्ये) बीच में और (सूर्यस्य) सूर्य के (उदिता) उदय समय में (उत्) और सायंकाल में (भगवन्ता) बहुत उत्तम ऐश्वर्य युक्त तथा (देवानाम्) पूर्ण विद्वान धार्मिक आप्त लांगो की(सुमतौ)उत्तम प्रज्ञा, श्रेष्ठ मति में(स्याम) स्थिर हों प्रवृत्त हों।

५—ओं भग एव भगवां अस्तु देवः
तेन वयं भगवन्तः स्याम ।
तं त्वा भगः सर्व इज्जोहवीति
स नो भग पुर एता भवेह ॥

अर्थ—हे सर्वाधिपते महाराजेश्वर! आप (भग) परमैश्वर्य स्वरूप तथा सर्वैश्वर्य प्रद होने से (एव) ही (भगवान्) सकल ऐश्वर्य सम्पन्न (अस्तु) हो (देवा:)हे विद्वानो! (वयम्)हम लोग (तेन) उस भगवान् की कृपा व सहायता से(भगवन्तः) सकल ऐश्वर्य युक्त (स्याम) हों।

(भग) हे परमेश्वर ! (सर्वः) संसार (तं त्वा) उस आपको (इत्) ही (जो हवीति) ग्रहण करने की अत्यन्त इच्छा करता है, अति श्रद्धा से पुकारता है (भग) हे सकलैश्वर्य प्रद ! (स) सो आप (इह) इस संसार से (नः) हमारे (पुर एता) अग्रगामी नेता (भव) हूजिये।

रात्रि में भजन बाद शयन से पूर्व उच्चारण के योग्य शिव संकल्प मन्त्राः

यजु० ३४। १-५।

ओं यज्जाग्रतो दूर मुदैति दैवं,
तदु सुप्तस्य तथवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं,
तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥१॥

अर्थः—हे जगदीश्वर वा राजन् आप की कृपा से (यत्) जो (दैवम्) आत्मा में रहने वा जीवात्मा का साधन (दूरंगमम्) दूर जाने, मनुष्य को दूर तक ले जाने, वा अनेक पदार्थों का ग्रहण करने वाला (ज्योतिषां) शब्द आदि विषयों के प्रकाशक श्रोत्र आदि इन्द्रियों को (ज्योतिः) प्रवृत्त करने हारा (एकं) एक (जाग्रतः) जागृत अवस्था में (दूरम्) दूर दूर (उत् एति) भागता है (उ) और (तत्) जो (सुप्तस्य) सोते हुए का (तथा एव) उसी प्रकार (एति) भीतर अन्तकरण में जाता है (तत्) वह (मे मनः) मेरा संकल्प विकल्पात्मक मन (शिव संकल्पम्) कल्याणकारी धर्म विषयक इच्छा वाला (अस्तु) हो।

ओं येन कर्माण्यपसो मनीषिणो,
यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानाम्,
तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥२॥

अर्थः—हे ईश्वर वा विद्वन् जब आप के संग से (येन) जिस (अप सः) सदा धर्म कर्मनिष्ठ (मनीषिणः) मन का दमन करने वाले (धीराः) ध्यान करने वाले बुद्धिमान् लोग (यज्ञे) अग्निहोत्रादि वा धर्मसंयुक्त व्यवहार व योग बल में (विदथेषु) विज्ञान सम्बन्धी युद्धादि व्यवहारों में (कर्माणि) अत्यन्त इष्ट कर्मों को (कृण्वन्ति) करते हैं (यत्) जो (अपूर्व) सर्वोत्तम गुणकर्म स्वभाव वाला (प्रजानां) ।णिमात्र के (अन्तः) हृदय में (यक्षम्) पूजनीय वा संगतएकीभूत हो रहा है (तत्) वह (मे) मेरा (मनः) विचार करना रूप मन (शिव संकल्पम्) धर्मेष्ठ (अस्तु) होवे ।

ओं यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च,
यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते,
तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥३॥

अर्थः—हे जगदीश्वर वा परमयोगिन् विद्वन् ! आप के बताने से (यत्) जो (पज्ञानम्) विशेष कर ज्ञान का उत्पादक बुद्धिरूप (उत) और भी (चेतनः) स्मृति का साधन (धृतिः) धैर्य स्वरूप (च) और लज्जादि कर्मो को हेतु (प्रजासु) मनुष्यों के (अन्तः) अन्तःकरण में

आत्मा का साथी होने से (अमृतम्) नाश रहित (ज्योतिः) प्रकाश-स्वरूप है (यस्मात्) जिसके (ऋते) बिना (किं चन) कोई भी (कर्म) कार्य (न क्रियते) नहीं किया जाता [तत्] वह [मे] मुझ जीवात्मा का [मनः] सब कर्मों का साधन रूप मन (शिव संकल्पम्) कल्याणकारी परमात्मा में इच्छा रखने वाला अस्तु हो।

ओं येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्,
परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्त होता,
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥४॥

हे मनुष्यो (येन) जिस (अमृतेन) नाश रहित परमात्मा के साथ युक्त होने वाले मन से (भूत) व्यतीत हुआ [भुवनम्] वर्तमान काल सम्बन्धी [भविष्यत्] होने वाला [सर्वम् इदम्] यह सब त्रिकालस्थ वस्तुमात्र [परिगृहीतम्] सब ओर से गृहीत होता अर्थात् वा जाना जाता है [येन] जिससे [सप्त होता] सात मनुष्य होता वा पांच प्राण छठा जीवात्मा और अव्यक्त सातवां ये सात लेने देने वाले जिसमें ही वह [यज्ञः] अग्नि सोमादि वा विज्ञानरूप व्यवहार [तायते] विस्तृत किया जाता है [तत्] वह [मे] मेरा मनः योगयुक्त चित्त [शिव संकल्पम्] मोक्षरूप संकल्पवाला [अस्तु] होवे।

ओं यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन्,
प्रतिष्ठिताः रथनाभा विवाराः ।

यस्मिंश्चित्तं सर्वं मोतं प्रजानाम्,
तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥५॥

अर्थः–[यस्मिन्]जिस मन में[रथनाभाविव, अरा] जैसे रथ के पहिये के बीच के काष्ठ में अरा वर्ग होते हैं वैसे [ऋचः] ऋग्वेद [साम] सामवेद [यजूंषि] यजुर्वेद [प्रतिष्ठिता] सब ओर से स्थित और [यस्मिन्] जिसमें [प्रजानाम्] प्राणियों का [सर्वम्] समग्र [चित्तम्] सब पदार्थ सम्बन्धी ज्ञान [ओतम्] सूत में मणियोंके समान संयुक्त है [तत्] वह [मे] मेरा [मनः] मन [शिव संकल्पम्] कल्याणकारी वेदादि शास्त्रों का प्रचाररूप संकल्प वाला [अस्तु] हो।

ओं सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्,
नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठम्,
तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥६॥

अर्थः–[यत्] जो मन [सुषारथिः] जैसे सुन्दर चतुर सारथि गाड़ीवान् [अश्वानिव] लगाम से घोड़ों को सब ओर से चलाता है वैसे [मनुष्यान्] मनुष्यादि प्राणियों को [नेनीयते] शीघ्र-शीघ्र इधर-उधर घुमाता है और [अभीशुभिः] जैसे रश्मियों से [वाजिनः] वेगवाले घोड़ों को सारथि वश में करता है वैसे नियम में रखता [यत्] जो [हृत्प्रतिष्ठम्] हृदय में स्थित [अजिरम्] विषयादिमें प्रेरक व वृद्धादि अवस्था रहित और [जविष्ठम्] अत्यन्त वेगवान् है [तत्] वह [मे] मेरा [मनः] मन [शिवसंकल्पम्] मङ्गलमय नियम में इष्ट [अस्तु] होवे।

—❀—

प्रकाशक : डॉ० हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार
व्यवसायाध्यक्ष, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार
मुद्रित : गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी मुद्रणालय, हरिद्वार